सत्य गुरु कबीर

Satya Guru Kabir

guru-mahimā, pūnon-māhātmya - Special Issue

गुरु-महिमा, पूनो-माहात्म्य विशेषाङ्क

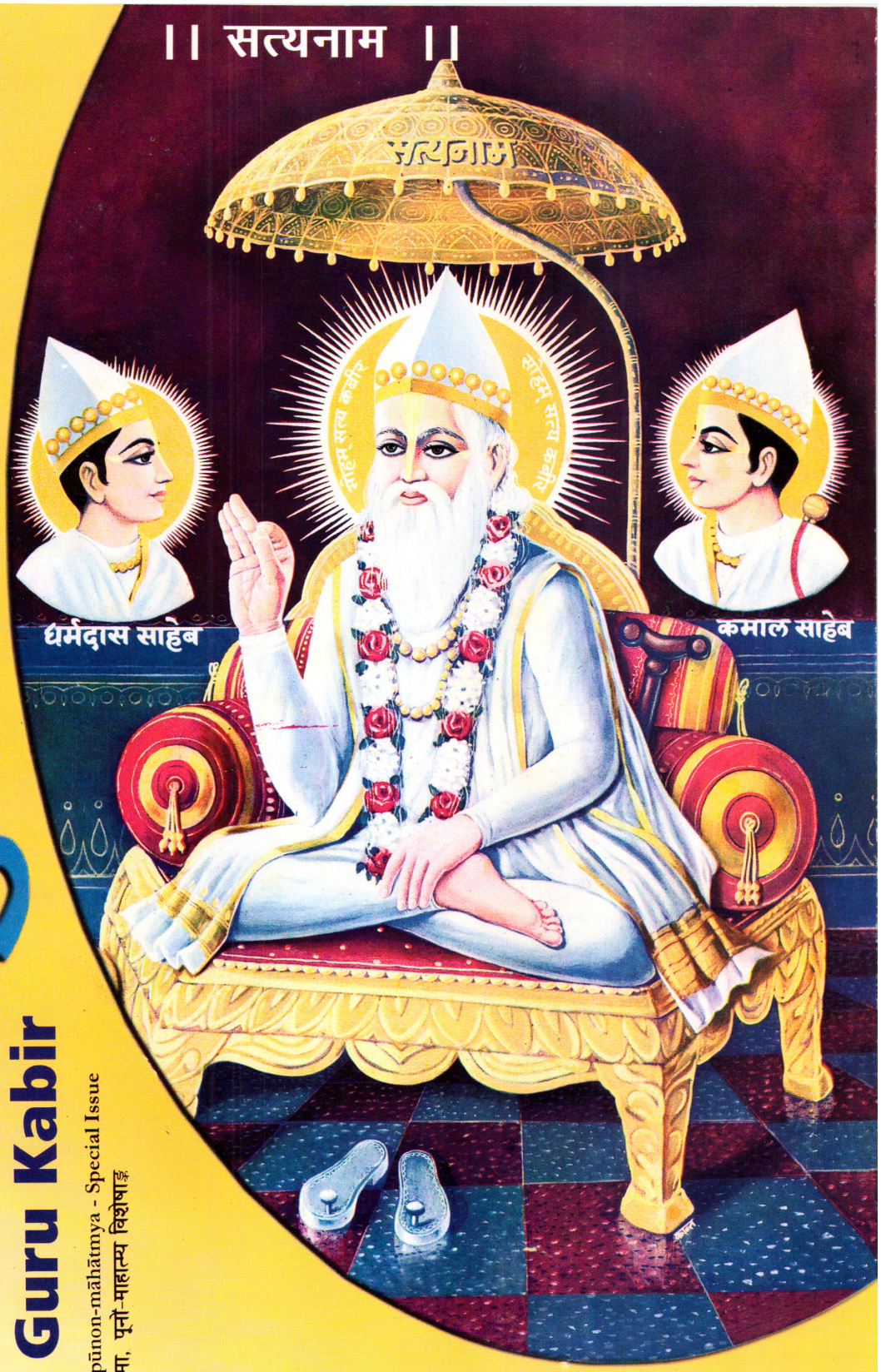

Saaheb teri saahebi, saba ghat rahi samaay
Jyon mehendi ke paat me, laali lakhi na jaay

The godliness of the paramaatma is present in everything, just like the undiscernable red colour in the mehendi leaves. And as on crushing the leaves that the reddish tint appears, likewise this godliness appears only when one uses one's mind to see it.

- Shree Kabir Council
  La Caverne, Vacoas
- Shree Satya Kabir Muktamaneenaam
  Dharmic Sabha – Pointe Aux Piments
- Shree Mahaprabhu Kabir Dharmasthan
  Morcellement St. André

भजन

पानी में मीन पियासी

पानी में मीन पियासी, मोहि सुन सुन आवे हाँसी ।।टेक।।
आतम ज्ञान बिनानर भटके, कोई मथुरा कोई काशी ।
मिरगा नाभि बसे कस्तूरी, बन बन फिरत उदासी ।।1।।
जल बिच कमल कमल बिचकलियाँ, तापर भँवर निवासी ।
सोमन बस त्रैलोक्य भयो है, यती सती सन्यासी ।।2।।
है हाजिर तेहि दूर बतावें, दूर की बात निरासी ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, गूरु बिन भरम न जासी ।।3।।

कोई सफा न देखा दिलका

कोई सफा न देखा दिलका ।।टेक।।
बिल्ली देखी बगुला देखा, साँप जो देखा बिल का ।
ऊपर ऊपर सुन्दर लागे, अन्दर काले दिल का ।।1।।
काजी देखा मुल्ला देखा, पण्डित देखा छलका ।
औरन को बैकुण्ठ बतावे, आप नरक में सरका ।।2।।
पढ़े नहीं गुरु मन्तर कोई, भरा गुमान कुमति का ।
बैठत नहीं साधु की संगत, करे गुमान बरन का ।।3।।
मोह फाँस में गला बन्धा है, भोग करे कामिनी का ।
काम क्रध दिन रात सतावे, लानत ऐसे तन का ।।4।।
सत्यनाम को मूढ़ पकड़ले, छोड़ कपट सब दिल का ।
कहैं कबीर सुनो सुल्ताना, पहिर फकीरी खिलका ।।5।।

Bhajan

pānī men mīna piyāsī

pānī men mīna piyāsī, mohi suna suna āve hansī || ṭeka ||
ātama gyāna binā nara bhaṭake, koī mathurā koī kāśī |
miragā nābhi base kastūrī, bana bana phirata udāsī || 1 ||
jala bica kamala kamala bica kaliyān, tāpara bhavara nivāsī |
so mana basa trailokya bhayo hai, yatī satī sanyāsī || 2 ||
hai hājira tehi dūra batāven, dūra kī bāta nirāsī |
kahain kabīra suno bhāī sādho,
guru bina bharama na jāsī || 3 ||

koī saphā na dekhā dila kā

koī saphā na dekhā dila kā || ṭeka ||
billī dekhī bagulā dekhā, sānpa jo dekhā bila kā |
ūpara ūpara sundara lāge, andara kāle dila kā || 1 ||
kājī dekhā mullā dekhā, paṇḍita dekhā chalakā |
aurana ko baikuṇṭha batāve, āpa naraka men sarakā || 2 ||
paḍhe nahīn guru mantara koī, bharā gumāna kumati kā |
baiṭhata nahīn sādhu kī sangata,
kare gumāna barana kā || 3 ||
moha phānsa men galā bandhā hai,
bhoga kare kāminī kā |
kāma krodha dina rāta satāve, lānata ese tana kā || 4 ||
satyanāma ko mūḍha pakaḍale,
choḍa kapaṭa saba dila kā |
kahain kabīra suno sultānā, pahira phakīrī khilakā || 5 ||

Scheme of Transliteration

ब	a	अं	ṁ	छ	cha	थ	tha	र	ra
आ	ā	अः	ḥ	ज	ja	द	da	ल	la
इ	i	ऋ	ṛ	झ	jha	ध	dha	व	va
ई	ī	ॠ	ḷ	ञ	ña	न	na	श	śa
उ	u	क	ka	ट	ṭa	प	pa	ष	ṣa
ऊ	ū	ख	kha	ठ	ṭha	फ	pha	स	sa
ए	e	ग	ga	ड	ḍa	ब	ba	ह	ha
ऐ	ai	घ	gha	ढ	ḍha	भ	bha	क्ष	kṣa
ओ	o	ङ	ṅa	ण	ṇa	म	ma	त्र	tra
औ	au	च	ca	त	ta	य	ya	ज्ञ	gya

आचार्य महंत संत सर्वेश्वर दास शास्त्री

|| satyanāma ||

Satya Guru Kabir

A Quarterly Journal on the teachings of Sadguru Kabir Saheb.

Kabīrābd 604 Pauṣa-Māgha-Phālguna 2059 January-February-March 2003 Vol. 1 No. 4

Founder
M. Komaldass

H. Chief Editor
Acharya Mahant
Sant Sarveshwar Das Shastri
Saahitya-Vyaakaran-Vedaanta Saankhyayogaachaarya-LLB

Editor in Chief
M. Amardass

Board of Editors
Poorundass, Rajiv
M. Ravindradass
M. Prabhatdass

Advisor
Rajnarain

Address
4, Mosque Road
Morcellement St Andre
Plaine des Papayes
Mauritius

P.O. Box 637
Port Louis, Mauritius

Tel. (230) 261 7708
(230) 261 7773

e-mail: satyaguru_kabir@hotmail.com

Subscription
4 yearly issues
Yearly subscription Rs 100.00
Unit Price Rs 25.00

Printed at
Globe Printing, 41, Wellington St.,
Port Louis, Tel/Fax.: 208-1863

साखी - sākhī

कबीर खड़े बाजार में, सबकी चाहे खैर ।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर ॥
kabīra khaḍe bājāra mein, sabakī cāhe khaira |
nā kāhū se dostī, nā kāhū se baira ||

Kabir says : " I stand in the market place and I desire the welfare of all.
I am neither related to anyone nor am I the anyone's enemy."

Commentary :
Kabir Saheb was above all religious conflicts, so he went neither to the temple, nor to the mosque. He chose the market place to preach, because people of all religions go there. *Kabir Saheb* preached the truth and wanted the welfare of all equally.

पच्छा पच्छी के कारणे, सब जग रहा भुलान ।
निरपच्छ होई के हरि भजे, सोई संत सुजान ॥
pachā pachī ke kāraṇe, saba jaga rahā bhulāna |
nirapacha hoī ke hari bhaje, soī santa sujāna ||

People are divided into various groups (religions) and thus the whole world is misguided. Being impartial to the worldly groups (religions), one who performs the devotion to Almighty God is the true saint.

Commentary :
There are many religions in the world and people stick to their favourite religions. But a saint understands that all souls are the same, and that God dwells in every heart. The saint recognises God in all, and remains impartial to the various religions.

चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय ।
दोउ पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय ॥
calatī cakkī dekha ke, diyā kabīrā roya |
dou pāṭana ke bīcamen, sābuta bacā na koya ||

Kabīra says: "looking at the millstones, I wept;
One who is caught between the two stones, never comes out safely.

Commentary :
The cycle of birth and death, and all other pairs of opposites (pleasure and pain, love and hate, virtue and sin) are like the millstones, and a person who is caught between them becomes figuratively crushed. Liberation is attained by transcending the pairs of opposites.

Commentary by **Acharya Mahant Jagdish Das Shastri**
Jamnagar, Gujarat, India

Cover : **Sadguru Kabīra Sāheba** and two of his main disciples. In the left inset is **śrī Dhanī Dharmadāsa Sāheba** and the right inset shows **श्री Kamāla Sāheba**. **श्री Dharmadāsa Sāheba** was the *nagara-seṭha* of the *Bāndhavagaḍha* (U.P India) King. He became the disciple of **Sadguru Kabīra Sāheba** and spent all his wealth for the welfare of the people. *Sāheba Jī* made **श्री Kamāla Sāheba** his disciple after he brought him back to life and inspired him to work for the happiness of the society.

No part of this publication may be reprinted or otherwise reproduced without the prior permission from the chief editor.
The opinions and thoughts expressed in the articles published in this journal are those of the writers and not those of the Satya Guru Kabir Committee.

सम्पादकीय

भारत, मारीशस एवं पूरे विश्व में जहाँ-जहाँ सद्गुरु कबीर साहेब के अनुयायी हैं, सभी अपनी-अपनी सुविधानुसार माघ मास (फरवरी) में "सद्गुरु कबीर अन्तर्ध्यान महोत्सव" मनाते हैं। इसी विषय पर संक्षेप में प्रकाश डालने का प्रयास कर रहे हैं।

पानी से पैदा नहीं, श्वासा नहीं शरीर ।
अन्न आहार करता नहीं, ताका नाम कबीर ।।
अनंत कोटि ब्रह्माण्ड में, बंदीछोड़ कहाय ।
सो तो पुरुष कबीर हैं, जननी जन्या न माय। ।

परमात्मा सद्गुरु कबीर साहेब के बारे में यह वाणी सन्त गरीबदास जी साहेब ने कही है, जिसका अर्थ है कि पाँचों-तत्त्वों आकाश, जल, अग्नि, वायु और पृथ्वी से भिन्न श्वास रहित जिनका शरीर है और किसी प्रकार के भोजन व जल की भी जिन्हें आवश्यकता नहीं है उन्हें हम सद्गुरु कबीर साहेब के नाम से जानते हैं।

हम मानव एवं चारों खानि के प्राणी एक छोटे से पृथ्वी-ग्रह के वासी हैं किन्तु परमात्मा कबीर साहेब करोड़ों ब्रह्माण्डों में "बन्दीछोड़" अर्थात् मुक्तिदाता के नाम से विख्यात हैं। वे किन्हीं माता-पिता द्वारा जन्म नहीं लेते, क्योंकि वे समस्त संसार के स्वयं परमात्मा हैं।

ऐसे परमात्मा सद्गुरु कबीर साहेब इस धरा-धाम में विक्रम संवत् १४५५ (ईश्वी सन् १३९८) की ज्येष्ठ पूर्णिमा सोमवार को भारत उत्तर प्रदेश में स्थित पवित्र काशी नगरी के मनोरम लहर तालाब में एक विशाल कमल पुष्प पर प्रातः कालीन बेला में अवतीर्ण हुये। भक्त दम्पत्ति श्री गौरी-शंकर (नीरू) एवं श्रीमती सरस्वती देवी (नीमा) ने उन प्रकाश एवं तेजोमय बालक को देखा और अपने घर ले आये। आज वह स्थान "कबीर-चौरा" के नाम से विख्यात है। उन बाल रूप परमात्मा ने स्वयं अपना नाम "कबीर" बताया। बाद में श्री स्वामी रामानन्द जी को गुरू बनाये और स्वयं परमात्मा होते हुये भी "गुरु" पद की महत्ता (श्रेष्ठता) को प्रतिपादित किया। श्री रामानंद स्वामी ने दक्षिण-भारत से भक्ति-मार्ग का जो सुन्दर पौधा लाकर उत्तर-भारत के आंगन में लगाया, उसे सिञ्चनहार माली की आवश्यकता थी और सद्गुरु कबीर साहेब के मिलते ही उनके हाथ में सौंपकर आप निवृत्त हुये। आज भी सन्तों में यह उक्ति प्रसिद्ध है:-

भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाये रामानन्द ।
प्रगट कीन कबीर ने, सात दीप नव खण्ड ।।

सद्गुरु कबीर साहेब के इस धरा पर अवतरणकाल में भारत की स्थिति बड़ी ही विषम थी। वह समय भारतवर्ष के इतिहास का एक विशेष युग है। उस समय तक भारत-वर्ष पर इस्लाम धर्म के अनुयायी देशों के अनेक आक्रमण हो चुके थे, और मुहम्मद गोरी के पश्चात् हिन्दू राजसत्ता छिन्न-भिन्न हो गई थी। हिन्दुओं में आन्तरिक विरोध के भाव प्रबल थे। जातिवाद एवं धर्मान्धता ने उस विकृत कर दिया था। भारतीय शासन सत्ता की बागडोर मुसलमान शासकों के हाथों में जा चुकी थी। हिन्दू और मुसलमान विजित (हारे हुये) और विजेता के रूप में एक दूसरे के सम्मुख उपस्थित थे। वे दोनों ऐसी दो संस्कृतियों के अनुयायी थे जो भिन्न ही नहीं, परस्पर विपरीत और कई बातों में परस्पर विरोधी भी थे।

इतिहास की दृष्टि से मुहम्मद तुगलक और फीरोजशाह तुगलक के शासन के फलस्वरूप समाज पर विपत्तियों का भार दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा था। इसके पश्चात् विक्रम संवत् १४५४ में समरकन्द का अमीर तैमूरलंग का नृशंस आक्रमण हुआ। जिसके स्मरण-मात्र से रोमाञ्च हो आता है। इसके कारण तो हिन्दू समाज की रीढ़ ही टूट गई थी।

गुलाम, खिजली और तुगलक शासकों के पश्चात् लोदी वंश के शासकों ने भी हिन्दुओं के साथ अन्याय पूर्ण व्यवहार करने में कोई कसर न उठा रखी थी। इस प्रकार जब सद्गुरु कबीर साहेब का आविर्भाव हुआ तब दुःख, दुर्भिक्ष, विपत्ति और अत्याचारों के घटाटोप में घिरी हुई जनता किसी प्रकार जीवित रहकर अपने दिन काट रही थी।

शाहंशाह सिकन्दर लोदी का पीर (गुरु) शेखतकी उस समय काशी में रहकर धर्मान्ध होकर धर्मपरिवर्तन कराने में लगा था। मुसलमानों के समाज में मुल्लाओं और मौलवियों का जोर था। वे ही मदरसों और मकतबों में पढ़ाते थे और वे ही मस्जिदों में फतवे (आदेश) दिया करते थे। उन दिनों समाज के सभी वर्गों, हिन्दूओं और मुसलमानों में असत्य और आडम्बर का जोर था। हिन्दू समाज में वर्णाश्रम-व्यवस्था के नाम पर समाज में विषमता, अज्ञान, भेदभाव, अन्धविश्वास आदि का बोल-बाला था, हिन्दू रूढ़िवादी, जादू-टोना आदि शैतानी कलाओं में विश्वास करते थे। शिक्षा की कमी थी। जीव हिंसा, मांस भक्षण, देवी-देवताओं के नाम पर जीवों की बलि देना, मद्यपान और कुचरित्रता आदि घर कर बैठे थे। निर्धन वर्ग सर्वथा उपेक्षित था :-

"निर्धन आदर कोई न देई,
लाख जतन करै वोहि चित्त न धरेई ।
जो निर्धन सरधन कै जाई,
आगे बैठा पीठ फिराई ।।"

निर्धन का कोई सम्मान नहीं था, वह कितना भी काम करे उसकी ओर ध्यान देने वाला कोई नहीं था। यदि कभी वह किसी धनी के घर जाता तो धनी व्यक्ति उसकी ओर पीठ कर लेता था। निर्धन धनवानों के लिये पानी भरता और सफाई के काम में ही उसका जीवन बीत जाता था :-

"नित उठि कोरी गागरिया लै, लीपत जनम गयो।"

धार्मिक क्षेत्र में बौद्ध-धर्म के उदय के साथ ही ऊच्चवर्गीय सामाजिक व्यवस्था एवं धार्मिक आचार-विचारों

के प्रति विद्रोह की भावना का जन्म हो चुका था। कालान्तर में शंकराचार्य ने बौद्ध-धर्म का उन्मूलन करने का प्रयास किया और "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या" (परमात्मा ही एक मात्र सत्य है और संसार परिवर्तनशील होने के कारण मिथ्या है।) का उद्घोष कर "वेदान्त-दर्शन" की प्रतिष्ठा की। परन्तु सामान्य जनता के लिये परिस्थिति प्रायः अपरिवर्तित ही बनी रही। इसके बाद रामानुजाचार्य, माध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य आदि दार्शनिकों ने विभिन्न प्रकार से परमात्मा का निरूपण किया तथा भक्ति मार्गों की प्रतिष्ठा की। किन्तु इनका प्रभाव भी समाज के वर्ग-विशेष संस्कृतज्ञों पर ही पड़ा; सामान्य बहुसंख्य जनता अप्रभावित ही रही। हिन्दुओं में उच्चवर्णों द्वारा छुआछूत एवं पक्षपात पूर्ण रवैयों के कारण जनता बौद्ध-धर्म, जैन-धर्म, इस्लाम-धर्म की ओर आकर्षित हो रही थी। यह धर्म की भावना श्रद्धा पर नहीं अपितु पारस्परिक घृणा पर आधारित थी।

नाथ सम्प्रदाय के हठयोग, वैष्णव सम्प्रदाय की सरसता, शंकराचार्य के वेदान्त-दर्शन का मायावाद, सूफी सम्प्रदाय के प्रेमवाद, इस्लामी एकेश्वरवाद आदि तत्कालीन प्रचलित विभिन्न दार्शनिक विचार धाराओं और उपासना पद्धतियों से प्रभावित समाज में सद्गुरु कबीर साहेब का प्रादुर्भाव हुआ। इनमें से कोई भी पद्धति अपने एकाकी रूप में जनता को सन्तोष प्रदान करने में असमर्थ थी। सद्गुरु कबीर साहेब ने इस अभाव को पहचाना और उपर्युक्त सम्पूर्ण पद्धतियों के दोषों को ध्यान में रखते हुये परिष्कृत एक नई सर्वग्राह्य निर्गुण-परम्परा की स्थापना की । उन्होंने बाह्य धर्माचारों के आडम्बर पूर्ण व्यवहारों का खण्डन किया तथा एक ऐसी भक्ति-भावना का प्रचार किया जिसमें साकारोपसना और निराकारोपासना दोनों ही के तत्त्व विद्यमान थे।

सद्गुरु कबीर साहेब ने हिन्दू और मुसलमानों के पारस्परिक विरोध को पहचाना और साथ ही यह भी अनुभव किया कि दोनों का परस्पर एक होकर रहना नितान्त आवश्यक था। न हिन्दू मुसलमानों को भारत से बाहर निकाल सकते थे और न मुसलमान हिन्दुओं के सहयोग के बिना भारत में रह ही सकते थे। उनके आपस के विरोध का कारण धार्मिक एवं सांस्कृतिक अधिक था, राजनीतिक कम। इन परिस्थितियों को पहचान सद्गुरु कबीर साहेब ने सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों से सम्बद्ध समस्याओं की ओर विशेव ध्यान दिया तथा उनके बाह्याडम्बरों की बहुत खुलकर आलोचना की। उन्होंने केवल एक ईश्वर की उपासना पर विशेष जोर दिया। उनके अनुसार मंदिर एवं मस्जिद भले ही दो संस्कृतियों एवं परम्पराओं का प्रतीक है किन्तु राम और रहीम दो नामों से जाना-जानेवाला एक ही परमात्मा साम्प्रदायिक राग-द्वेश, भेद-भाव से परे है :-

भाई रे दो जगदीश कहाँ ते आया, कहु कौने भरमाया।
अल्लाह राम करीमा केशव, हरि हजरत नाम धराया ।।
गहना एक कनकते गहना, यामें भाव न दूजा ।
कहन सुनन को दुईकर थापे, एक निमाज एक पूजा ।।
वही महादेव वही मोहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये ।
को हिन्दू को तुरूक कहावै, एक जमीं पर रहिये ।।
वेद कितेब पढ़े वै कुतुबा, वै मौलाना वै पाँड़े ।
बेगरि-बेगरि नाम धराये, एक मटिया के भाँड़े ।।
कहहि कबीर वै दोनों भूले, रामहि किनहुँ न पाया ।
वै खस्सी वै गाय कटावै, बादहिं जनम गँवाया ।।

हे भाईयों! संसार के दो मालिक (परमात्मा) नहीं हैं। कहिये आप लोगों को किसने भ्रम में डाल दिया है ? उसी एक परमात्मा ने अल्लाह, राम, करीम, केशव, हरि और हजरत ये सब नाम धराये हैं। जिस प्रकार सोना और उस से बने गहने एक हैं, दोनों सोना ही हैं। इसी प्रकार नमाज और आरती-पूजा कहने, सुनने के लिये दो मान लिये गये हैं, वस्तुतः दोनों ही प्रकार-भेद से एक ही परमात्मा की पूजायें हैं। वही महादेव और वही मोहम्मद है तथा ब्रह्मा और आदम भी वही है। जब सब एक ही जमीन पर रहते हैं तो कौन हिन्दू और कौन तुरूक कहावेंगे ? वेदों को पढ़ने वाला पाण्डेय और किताबों के पढ़ने वाले मौलाना कहलाते हैं। ये एक ही मिट्टी से बने बर्तनों के अलग-अलग नाम हैं। कबीर साहेब कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों भूल में पड़े हुये हैं; क्योंकि इनमें से परमात्मा को किसी ने भी नहीं पाया है। हिन्दू लोग बकरों को और मुसलमान गायों को काटते हैं, इस प्रकार दोनों ही अपने जीवन को व्यर्थ गँवा रहे हैं।

इस प्रकार एकता व समत्व की प्रबल-भावना को लेकर सद्गुरु कबीर साहेब जनता के सम्मुख आये और उन्हीं की बोली में उन्होंने विभिन्न सम्प्रदायों के वन में भटकती हुई जनता को सच्चा मार्ग दिखाया। उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप धर्म को पहचानकर एक ऐसे निर्भीक प्रगतिशील सम्प्रदाय की स्थापना की जिसमें "एकेश्वरवाद" और जातिवाद-छूआछूत से परे "समत्व" सिद्धान्त की भावना प्रमुख थी।

अपने सिद्धान्त एवं भक्ति के प्रचार हेतु वे दूर-दूर देशों मे धर्मयात्रा किये, वे स्वयं कहते हैं :-

"देश-विदेशे हौं फिरा, गाँव-गाँव की खोरि।।"

"मैं अपनी बातों को समझाने के लिये देश-विदेश की यात्रा किया और गाँव-गाँव की गलियों में भक्ति का प्रचार किया।।"

एक बार धर्म-यात्रा के प्रसंग में संत एवं भक्त मण्डली के साथ सद्गुरु कबीर साहेब भारत के विभिन्न भागों मे भक्ति के प्रचार के लिये निकले। अवध, प्रयाग, दिल्ली, मरु, मालव आदि अनेक स्थानों से दक्षिण भारत की ओर जाते हुये रास्ते में अनेक असंतों को संत बनाते हुये, पाखंडियों को सत्य की राह दिखाते हुये, हिन्दू-मुस्लिम एकता का महानाद करते हुये जन-कल्याण की भावना से मैसूर राज्य में पधारे। वहां श्री रामानुज सम्प्रदाय के बडगल शाखा का एक आश्रम था वहाँ कुछ दिन रहे। प्रथम दिन ही धोषणा की गई कि "भोजन के समय वेद मन्त्र बोलने वालों को ही पंक्ति में बैठने दिया जायेगा

अन्य को नहीं।" सद्गुरु उनकी चालाकी समझ गये। उन्होंने पास से एक भैंसा हाँक कर उन भोजन करने वालों के सामने लाया और बोले "भाइयों! इसे अपनी पंक्ति में बैठाओ क्योंकि यह एक महान वेदवेत्ता है।" यह कहकर उस भैंसे के मुख से वेद मन्त्रों को सस्वर उच्चारण कराकर परमात्मा सद्गुरु कबीर साहेब ने आत्म-तत्त्व की महत्ता उन मार्ग से भूले भक्तों को समझाई।

भारत यात्रा पूर्णकर सद्गुरु कबीर साहेब काशी लौटे उस समय श्री स्वामी रामानन्द जी सत्यलोकवासी हो गये थे। लोगों ने साहेब को बताया कि बलख देश का बादशाह इब्राहिम खुदा के दर्शन करवाने के बहाने हजारों हजार साधुओं, संतोंको जेल में डाल रहा है। तब आपने बलख में जाकर शाहको सत्य तत्त्व का बोध कराकर उसकी भ्रान्ति दूर कराई और सभी साधु-संतों को जेल के बन्धन से छुड़ाया। तभी से सन्त जन सद्गुरु कबीर साहेब को "बन्दीछोड़" कहते हैं और निम्न साखी गाते हैं :-

बन्दीछोड़ कहाइया, बलख शहर मंझार।
छूटे बन्धन भेष का, धन-धन कहै संसार।।

परमात्मा सद्गुरु कबीर साहेब के उपदेश में सत्य, दया, अहिंसा, विश्व-बन्धुत्व, शील, साम्प्रदायिक एकता प्रमुख रूप से हैं। जिसके जीवन में सत्य है उसे उन्होंने परमात्मा के सबसे निकट माना है :-

साच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदय साँच है, ताके हिरदय आप।।

मानव जगत् को अहिंसा का संदेश देते हुये उन्होंने कहा :-

जीव मत मारो बापुरा, सबका एकै प्राण।
हत्या कबहुँ न छूटि हैं, कोटिन सुनहु पुराण।।

किसी भी जीव की हत्या न करो क्योंकि सभी के प्राण एक समान हैं। करोड़ों बार पुराणों की कथा श्रवण से भी हत्या का पाप समाप्त नहीं होगा।

"जीव दया अरु आतम पूजा, इन सम देव अवर नहीं दूजा।।"

जीवों पर दया करना और उन्हें अपने समान जानना चाहिये क्योंकि इनसे बढ़कर संसार में दूसरा कोई अन्य देव नहीं है।

विश्व बन्धुत्व को निरुपित करते हुये साहेब जी ने कहा:-

देखो सब में राम है, एक ही रस भरपूर ।
जैसे ऊख से बना, चीनी, शक्कर गुर ।।

संसार के समस्त मानवों में वह परमात्मा व्याप्त है, भले ही उनके रंग एवं बनावट भिन्न-भिन्न हैं। जैसे गन्ने के रस से चीनी, शक्कर एवं गुड़ बनता है, किन्तु गन्ने की मधुरता सभी में निहित होती है।

ऐसे सत्यपुरुष सद्गुरु कबीर साहेब के शिष्य दोनों वर्गों के हिन्दू तथा मुसलमान थे। एक उनको सतगुरु मानते थे तो दूसरा पीरन के पीर। साहेब जी की सत्यलोक अन्तर्ध्यान यात्रा भी बड़ा ही आश्चर्य जनक थी। "काश्यांमरणान्मुक्तिः" भारत में आज भी हिन्दू-जन काशी में मरने से मुक्ति-प्राप्ति की मान्यता को एकमत से स्वीकार करते हैं। किन्तु सद्गुरु कबीर साहेब ने कहा :-

"लोगा तुमहि मति के भोरा ...
का काशी का मगहर ऊसर, हृदय राम बसे मोरा।
जो काशी तन तजई कबीरा, तो रामहि कवन निहोरा।।"

जिसने परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया है उसके लिये काशी और मगहर में कोई भेद नहीं होता। अल्पज्ञ लोग इस भेद को नहीं समझ पाते।

उन्होंने लोगों के भ्रम को दूर करने के लिये कि मगहर में मरने वालों की मुक्ति नहीं होती, वे विक्रम संवत् १५७५ (ईश्वी सन् १५१८) की माघ सुदी एकादशी दिन बुधवार को अन्तर्ध्यान होने के लिये काशी से मगहर पहुँचे। जन-कल्याण हेतु सैकड़ों वर्षों से सूखी 'आमी' नदी को जल से पूर्ण कर प्रवाहित किये। उनके साथ वहाँ हजारों की संख्या में उनके भक्त भी पहुँचे, जिनमें राजा वीरसिंह बघेला और नवाब बिजली खान पठान प्रमुख थे। सद्गुरु कबीर साहेब उपस्थित जन-समूह को अंतिम दर्शन एवं आशीर्वाद देकर पर्णकुटी के अंदर गये। समस्त जन-समूह शोकाकुल एवं भावविह्वल था। राजा बघेला साहेब जी के पार्थिव शरीर की दाहक्रिया करना चाहते थे तथा नवाब पठान मुस्लिम रीति से दफन। उसी समय एक नेत्रों को चकाचौंध करने वाली तीव्र प्रकाश-पुञ्ज पर्णकुटीके छत को चीरती हुई सूर्य की ओर बढ़ चली, वहाँ उपस्थित शुद्ध अन्तःकरण वाले सन्तों एवं भक्तों ने उस पवित्र ज्योति का दर्शन किया। उसी समय वहाँ आकाशवाणी हुई :-

"तुम खोलो परदा, है नहीं मुरदा, युद्ध अवस्था कर डारी।"

दफन एवं दाह के विवाद को छोड़ो और पर्णकुटी के अन्दर जाओ, वहाँ कोई पार्थिव शरीर (मुर्दा) नहीं है। आकाशवाणी सुनकर राजा एवं नवाब दोनों अन्दर गये। परमात्मा सद्गुरु कबीर साहेब अन्तर्ध्यान हो चुके थे। बिछी हुई चादर, समर्पित किये गये पुष्प ही वहाँ विद्यमान थे। चादर एवं पुष्पों को दो भागों में विभक्त किया गया। नवाब पठान ने वहाँ मजार बनवाया एवं राजा बघेला ने समाधि मंदिर। ६०४ वर्षों बाद भी आज वह पवित्र स्थान भारत में मगहर ग्राम में स्थित है, जहाँ मजार पर मुस्लिमवर्ग "कुरान" की "आयतों" का पाठ करते हैं और समाधि मंदिर में हिन्दू सन्त एवं भक्त समाज "बीजक" पाठ सत्संग व भण्डारा करते हैं। भारत सरकार ने सद्गुरु कबीर साहेब के सिद्धान्तों की उपादेयता को स्वीकार कर पुराने जिले को "सन्त कबीर नगर" का नाम दिया है तथा मगहर ग्राम में विशाल अष्टधातु की सद्गुरु कबीर परमात्मा की प्रतिमा स्थापित किया है। आज भी प्रतिवर्ष देश-विदेश से भक्त जन वहाँ पहुँचकर उन महापुरुष को स्मरण कर शीश नँवाते हैं। वे पुष्प में अवतरित हुये, जीवन पर्यन्त सुगन्धि विखेरते रहे और अन्त में पुष्प छोड़ कर अन्तर्ध्यान हो गये।।

इस अंक में विशेष रूप से अंग्रेजी-लिपि में "गुरु-महिमा" एवं "पूनों-माहात्म्य" दिया गया है। संत एवं भक्त जन इसके पाठ से लाभ लेकर अपने जीवन को कृतार्थ करेंगे ऐसी शुभकामना है।

।।सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु।।

सत्यनाम

सत्यलोकवासी श्री १००८ वंश प्रतापी पं. श्री हजूर
प्रकाशमणिनाम साहेब - श्री कबीर धर्मस्थान-खरसिया

'सत्यनाम' की प्राचीनता

आजकल कितने ही आधुनिक विचार के लोग इस बात का प्रश्न करते देखे जाते हैं कि, क्या 'सत्यनाम' अन्य नामों की अपेक्षा प्राचीन है? अतः उनके प्रति कुछ शब्द कह देना उचित प्रतीत होता है।

सृष्टि के चारों युगों में से सर्वप्रथम युग सतयुग है, और सतयुग के आदि काल से ही 'सत्यनाम' की चर्चा है। सद्गुरु कबीर साहब ने सतयुग में प्रगट होकर जीवों के कल्याणार्थ 'सत्यनाम' का उपदेश दिया था, तदनुसार ही आपका नाम भी 'सत् सुकृत' पड़ गया। "तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो!" छान्दोग्य उपनिषद् का यह वाक्य भी इसी बात की पुष्टि करता है। अर्थात् आत्मतत्त्व का नाम वाचक शब्द 'सत्य' है। अतः सभी प्रकार से 'सत्यनाम' की महत् प्राचीनता सिद्ध होती है:-

"आदि नाम सतनाम है, देत सदा गुरु-संत।
जो सुमिरत हैं स्नेह सों, सोई सिद्ध महंत।।"

प्राचीनता-प्रतिपादन के विषय में इतने शब्द कह देने के बाद अब हम पाठकों का ध्यान "सत्यनाम" की व्याख्या की ओर आकर्षित करते हैं जिससे उनकी बची हुई शंकाओं का समाधान होकर उसके मुख्य तथ्य का ज्ञान हो सकेगा।

'सत्यनाम' की व्याख्या

प्रतिक्षण घूमनेवाली प्रकृति की चक्की में सारा संसार पिसता चला जा रहा है। अनन्त ब्रह्माण्ड के जीव इस चक्की के दाने हैं। और निरन्तर घूमने वाली चक्की के बीच कीले की तरह वह अविचल निहतत्त्व, जिसका कि तीनों काल में बाध नहीं होता, "सत्य" कहलाता है।

"धर्मदास तत्त्व खोजि देखो, तत्त्व में निहतत्त्व है।
कहैं कबीर निहतत्त्व दरशो, आवागमन निवारिये।।"

'सत्य' वह वस्तु है कि जो अपनी सत्ता और स्फूर्ति से सारे संसार को टिकाये हुये है। सत्य के ही बल से लौकिक पारलौकिक सभी कार्यनियमबद्ध होकर चल रहे हैं। यह है उसके महत्त्व की प्रतिभा।

"सत्येन धार्यते पृथ्वी, सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च, सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।"

सत्य स्वयं 'साहब' है, अतएव हम कबीर पंथियों में 'सत्य साहब' कहा जाता है।

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदय सांच है, ताके हिरदय आप।।"

जिसके हृदय में सत्य है उसके हृदय में स्वयं साहब वर्तमान है; क्योंकि सत्यपुरुष साहब का स्वयं लोक 'सत्यलोक' कहलाता है:-

"तस्यायमात्माऽयं लोकः"।

उस अविनाशी पुरुष का लोक सत्य है - "सत्यलोक सुख साहेब सोई"। और उसका नाम भी सत्य है - 'न ह्यस्मादन्यत्परमत्स्यथ नामधेयं सत्यस्य सत्यमिति"। स्वयं सत्य के अतिरिक्त सत्य का दूसरा नाम नहीं हो सकता, क्योंकि सत्य से भिन्न नाम और सब नाशमान हैं। सत्य को स्मरण करने के लिये या कहने के लिये यदि किसी नाम का प्रयोग करना चाहें तो सत्य ही नाम का प्रयोग कर सकते हैं - "तस्य नाम सत्यमिति"। अर्थात् वह परम तत्त्व स्वयं 'सत्यनाम' है।

सत्यलोक और सत्यपुरुष की प्राप्ति के लिये सत्यनाम की उपासना करना आवश्यक है। और जो सत्यनाम का उपदेश देकर सत्यपुरुष को लखाते हैं उन्हीं का नाम 'सद्गुरु' है।

"जाको सद्गुरु ना मिला, व्याकुल दहुँ दिशि धाय।
आँखि न सूझै बावरा, घर जरे घूर बुताय।।"

'सत्यनाम' की उपासना

विक्षेप अर्थात् चित्त की चंचलता को दूर करने के साधनों में से उपासना का भी मुख्य स्थान है। और सभी तरह की उपासनाओं में मुख्य चेतनात्मरूप सद्गुरु की उपासना है, क्योंकि:-

"यस्य देवे पराभक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः, प्रकाशन्ते महात्मनः॥"

जिसकी गुरु में परमात्मा के समान भक्ति है, उसके हृदय में श्रुति-प्रतिपादित आत्मतत्त्व प्रकाशित होता है।

"जो तोहि सद्गुरु सत्त लखाव,
ताते न छूटै चरन भाव॥
अमर लोक फल लावै चाव,
कहँहिं कबीर बूझे सो पाव॥"

गुरु उपासना के समान नामोपासना भी अभ्युदय और निःश्रेयस को देने वाली है। "सत्यनाम" सद्गुरु का परम उपदेश है, अतः उपदेशक को याद करते रहने की औषध- स्मृति की तरह उनके उपदेश का स्मरण रखना अधिक फलदायक है। हाँ, कृतघ्नता की निवृत्ति के लिये सद्गुरु का स्मरण रखना भी अत्यन्त आवश्यक है, परन्तु तत्त्वोपदेश को भूलकर नहीं।

आत्मा (शुद्ध चेतन) के अनेक नामों में से 'सत्यनाम' उसका एक निज नाम है। क्योंकि यह आत्मा सत्य है, और सत्य का वाचक नाम सत्य ही हो सकता है -

"तानिह वा एतानि त्रीण्यक्षराणि सतीयमिति, तद्यत्सत्तदमृतमथ यत्ति तन्मर्त्यमथद्यंतेनोभे यच्छति" (छान्दोग्योपनिषद्)

सद्गुरु कबीर साहब ने भी, 'सत्त सत्त कहै सुमृतिवेद' इत्यादि वचनों से 'सत्यनाम' की महिमा का बहुत वर्णन किया है।

सन्तमत और 'सत्यनाम'

आज तक संसार के कल्याण कर्त्ता एवं पथप्रदर्शक सन्तों द्वारा जो जो अमूल्य शिक्षायें दी गयी हैं; वे सब संतमत के नाम से प्रसिद्ध हैं। संतमत के प्रायः समस्त महात्माओं ने मुक्तकंठ से 'सत्यनाम' की महिमा का वर्णन किया है, और इसी 'सत्यनाम' रूपी विशाल झंडे के नीचे समस्त सन्त-मतानुयायी-उदासी, सिक्ख, सत्यनामी, दरियापंथी, गरीबदासी, कबीरपंथी आदि वर्तमान हैं। या यों कहना और भी समुचित होगा कि इसी सूत्रात्मा 'सत्यनाम' के उपासक हैं। खेद है कि इस रहस्य को नहीं जानने वाले हमारे कतिपय भोले भाले कबीर पंथी भाई सर्वोत्कृष्ट 'सत्यनाम' से विमुख होते चले जा रहे हैं। अतः 'सत्यनाम' के विषय में पूर्ण जानकारी एवं उसके महत्त्व को समझाने ही के लिये इस लेख में पूर्ण प्रयास किया गया है। क्योंकि 'सत्यनाम' पूर्णशान्ति का प्रदाता है।

कलियुग और 'सत्यनाम'

यद्यपि 'सत्यनाम' का चारों युगों में समान प्रभाव है, तथापि वर्तमान युग में यह परम कल्याणकारी है; क्योंकि अन्य उपासनाओं से 'सत्यनाम' की उपासना सरल और सुविधाजनक एवं सद्गुरु का मूल उपदेश है। इस युग में अल्प जीवन होने के कारण अन्य तप साधनादि हो सकने कठिन हैं।

"कलि में जीवन अल्प है, करिये बेगि सम्हार।
तप साधन नहिं हो सके, केवल नाम आधार॥"
(तीसायंत्र)

इसके अतिरिक्त तप आदि साधनों से अहंकारादि भी उत्पन्न हो जाते हैं और हठयोगादि कामनामूलक होने के कारण अनर्थ कारक हैं। 'कच्चे सिद्ध न माया पियारी' इत्यादि। 'सत्यनाम' की उपासना से शील, सन्तोष, दया, क्षमा इत्यादि शुभ गुणों का प्रकाश होता है।

"तस्माच्च तपसां संगात्सोऽहंकारी भवेज्जनः।
सत्यनामाश्रयो यश्च, स शीलादिगुणान्भजेत्॥"

जो संत महात्मा या व्यक्ति 'सत्यनाम' की उपासना करते हैं, वे अनेकों भ्रामक शरीरों को त्याग कर स्वपरमात्मस्वरूप में लय होते हैं अर्थात् अपने शुद्धस्वरूप को प्राप्त हो जाते हैं।

"केवलं नाम यो ध्यायेन्मनसा जिह्वया स च।
त्यक्त्वा तनुं लयं याति, निस्तत्त्वे परमात्मनि॥"

सत्यनाम से विचलित होने पर प्राणी अपने स्वरूप को भूलकर महान अनर्थों में फँस जाता है। इस स्थान पर कुछ ऐसे ही प्रसिद्ध पुरूषों की नामावली भी सुन लीजिये जिनकी कि 'सत्यनाम' के भजन बिना दयनीय दशा हो गयी। फिर भला साधारण व्यक्ति की क्या गिनती।

"जगत में काहू न मन बस कीन्हा ॥टेक॥
भरतखण्ड में भरत भये योगी, मृगसुत मन हर लीन्हा ॥
ता कारण देह ही त्यागी, मृग शरीर चित दीन्हा ॥१॥
सूखे पत्र पवन भख रहते, पाराशर से ज्ञानी ।
सो तो रूप देखि बनिता को, काम कन्दला ठानी ॥२॥
शृंगी ऋषि बन भीतर रहते, विषय विकार न जाना ।

पठई नारी नृप दशरथ ने, पकड़ अयोध्या आना ॥३॥
पार्वती सी पत्नी कहिये, तिनका मन क्यों डोला ।
छकित हुये शिव देख मोहनी, हा हा करके बोला ॥४॥
सोलह सहस उर्वशी जाके, ताका मन बौराना ।
गौतम ऋषि की नारि अहिल्या, ताहि देखि ललचाना ॥५॥
नारद मुनि से तपसी कहिये, कन्या हाथ दिखायो ।
माँग्यो रूप भूप श्रीपति को, स्वांग बँदर को लायो ॥६॥
जमदग्नी की नारि रेनुका, जात जमुन जल भरने ।
मोही देख भूप की लीला, छकित भये दो नयने ॥७॥
एक ही नाल कमल सुत ब्रह्मा, जग उपराज कहाये ।
कहैं कबीर 'सत्नाम' भजन बिन, जिव विश्राम न पाये ॥८॥

उपरोक्त उदाहरणों से 'सत्यनाम' विमुख होने से जो दशा होती है, वह स्पष्ट प्रगट हो जाता है। अतएव इस कलियुग में सिवा 'सत्यनाम' की उपासना के अन्य कोई उपयुक्त उपासना ही नहीं प्रतीत होती; क्योंकि 'सत्य' स्वयं सत्य और तीनों कालों और सभी युगों में सत्य है।

'सत्यनाम' की श्रेष्ठता

और 'सत्यनाम' सत्य ही होने के कारण समस्त वेदज्ञ इसका मनन करते हैं। इसी के प्रभाव से मननशील सन्त होते हैं, और सत्यलोक की इच्छा करने वाले वैराग्यवान वैराग्य धारण करते हैं।

"एतमेव बहवृचा महत्युक्थे मीमांसन्ते,
एतमग्नावध्वर्यव एतं महाव्रते छन्दोगाः" ।
"एतमेव विदित्वा मुनिर्भवति,
एतमेव प्रवाजिनो लोकमिच्छन्तः प्रव्रजन्ति" ॥
"सत्य के नाम से सागर भरा,
सत्य के नाम तिहुँ लोक छाजा ।
सन्तजन आरती करैं प्रेमतारी भरैं,
ढोल निशान मिरदङ्ग बाजा ॥
भक्तिसाँची किया नाम निश्चय लिया,
शून्य के शिखर पर ब्रह्मांड गाजा ।
सत्यकबीर सर्वज्ञ साहेब मिले,
भजो 'सत्यनाम' क्या रंक राजा ॥"

और 'सत्यनाम' का भास हो जाने पर तो सत्य ही सत्य दृष्टिगोचर होता है, या यों कहना चाहिए कि दृष्टि स्वयं सत्य बन जाती है -

"मेरे निरधन के धन सतनाम॥
जेहि प्रताप कोई रंक राव से, मोहि नहीं कुछ काम ।।टेक॥
कामधेनु चिन्तामणि पारस, कल्पवृक्ष अभिराम ।
ऋद्धि सिद्धि सब ताके सन्मुख, दीखत तुच्छ निकाम ॥
अक्षर चारि अखिल फलदायक, अतुलित ललित ललाम ।
महामन्त्र यहि जानि सन्त जन, जपत हैं आठों याम ॥
नासत सकल अरिष्ट दाहिने, होत विधाता वाम ।
उठि प्रभात जो करत हैं चिन्तन, क्षण भरि मन विश्राम ।
दृढ़ श्रद्धा धर्मदास धारि उर, तजि रहीम अरू राम ।
गुरु कबीर के शरणे आयो, तब पायो सुख धाम ॥"
(क. सं. र.)

फिर भला ऐसा कौन सा व्यक्ति होगा जो ऐसे सत्यनाम- भजन के लिये लालायित न हो उठे! परन्तु इस कार्य में भी अन्य साधनाओं की भाँति अनेकों कौटुम्बिक बाधायें आ उपस्थित होती हैं; अतएव उन्हें युक्तिपूर्वक निवारण कर :-

"जपु मन सत्यनाम सुखदाई ।
जो तू चाहे आय जगत में, अपनी मूढ़ भलाई ।।टेक॥
गर्भवास में भक्ति कबूल्यो, सो सब सुधि बिसराई ।
आप पर्यो माया के फँदे, मोह जाल अरुझाई ॥१॥
मात पिता सुत भाई बन्धु तिय, बहिन बुआ भौजाई ।
अपने-अपने स्वारथ कारण, प्रीतिकरत सब आई ॥२॥
भवसागर में भटकत-भटकत, यह मानुष तन पाई ।
खोवे वृथा भक्ति बिन प्रभु की, धिक् ऐसी चतुराई ॥३॥
कहैं कबीर चेतु अबहूँ नहिं, फिर चौरासी जाई ।
पाय जन्म शूकर कूकर को, भोगेगा दुःख भाई ॥४॥

इस कारण आत्मशान्ति तथा निज स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करने के लिये 'सद्गुरु' और 'सत्यनाम' की उपासना परमावश्यक है; क्यों कि 'सद्गुरु' उपदेशक और 'सत्यनाम' उनका पुण्योपदेश है। यही 'सत्यनाम' की सर्वश्रेष्ठता है -

"सद्गुरु के उपदेश हैं, अतिशय सुख की खानि ।
वेद मन्त्र सम जानि के, लेहु हृदय में मानि ॥

।। इति-शम् ।।

|| satyanāma ||

|| atha śrī gurumahimā ||

(prathama sopāna)

caupāī (1)

guru kī śaranā līijai bhāī, jāte jīva naraka nahin jāī ||
gurumukha hoya parama pada pāvai, caurasī men bahuri na avai ||
gurupada seve birlā koī, jāpara kṛpā sāheba kī hoī ||
guru bina mukti na pāvai bhāī, naraka adho mukha bāsā pāī ||
guru kī kripā kaṭai yamaphansī, bilamba na hoya milai avināsī ||
guru bina kāhu na pāyā gyānā, jyon thothā bhusa chānḍu kisānā ||
guru mahimā śukadeva ju pāī, caḍhi vimāna baikuṇthe jāī ||
guru bina paḍhe jo veda purāṇā, tāko nāhin mile bhagavānā ||
guru kā sevaka jo re subhāgā, māyā moha sakala bhrama tyāgā ||
guru kī nāva caḍhe jo prāṇī, kheya utāre sataguru gyānī ||
tirtha vrata deva aura pūjā, guru bina dātā aura na dūjā ||
navon nātha caurāsī siddhā, guru ke caraṇa seve govindā ||
guru bina preta janma so pāvai, varṣa sahasra garbha māhin rahāvai ||
guru bina dāna punya jo karahīn, mithyā hoya kabahūn nahin phalahīn ||
guru bina bhrama nā bhāgai bhāī, koṭi upāya karai caturāī ||
guru bina homa yagya jo sādhe, auron mana dasa pātaka bandhe ||
sataguru mile to agama batāvai, yama kī anca tāhi nahin avai ||
guru ke mile kaṭe dukha pāpā, janma janma ke miṭe santāpā ||
guru ke caraṇa sadā cita dījai, jīvana janma suphala kara lījai ||
guru ke caraṇa sadā cita jānā, kyon bhūle tuma catura sujānā ||
guru-bhaktā mama ātama soyī, vākai hirade raho samoī ||
gurumukha gyāna le ceto bhāī, mānuṣa janma bahuri nahin āī ||
sukha sampati āpana nahin prāṇī, samujhi dekhu tuma niścaya jānī ||
caubisa rūpa hari āpahi dhariyā, guru sevā hari āpahi kariyā ||
guru kī nindā sune jo kānā, tāko niścaya naraka nidānā ||
daśavān anśa guru ko dījai, jīvana janma suphala kari lījai ||
gurumukha prāṇī kāhe na hūjai, hiradaya nāma amī rasa pījai ||
guru sīḍhī caḍhi ūpara jāī, sukha sāgara men rahe samāī ||
apane mukha jo nindā karaī, śūkara śvāna janma so dharaī ||
nigurā kare mukti kī āśā, kaise pāvai mukti nivāsā ||
auron sukṛta deha jo pāvai, sataguru binā mukti nahin pāvai ||
gaurī śankara aura gaṇeśā, sabahina līnhā guru upadeśā ||
śiva virañci guru sevā kīnhā, narada dīkṣā dhruva ko dīnhā ||
sataguru mile param sukha dāī, janma janma kā dukha nasāī ||
jaba guru kiyā aṭala avināśī, sura nara muni saba seva karāsī ||
bhavajala nadiya agama apārā, guru bina kaise utare pārā ||

guru bina kaise ātama jānai, sukha sāgara kaise pahicānai ||
bhakti padārata kaise pāvai, guru bina kauna ju rāha batāvai ||
guru mukha nāmadeva raidāsā, guru mahimā unahūn parakāśā ||
taintisa koṭi deva tripurārī, guru bina bhūle sakala acārī ||
guru bina bharmai lakha caurāsī, janma aneka naraka ke vāsī ||
guru bina paśū janma so pāvai, phira-phira garbhavāsa mahan āvai ||
guru vimukha soī duḥkha pāvai, janma janma soī dahakāvai ||
guru sevai jo catura sujānā, guru paṭatara koī aura na ānā ||
guru kī sevā mukti nija pāvai, bahuri na hansā bhavajala āvaī ||
bavajala chūṭana yehi ūpāī, guru kī sevā karo saba dhāī ||

|| sākhī ||

sataguru dīnadayāla hain, deī mukti ka dhāma |
mansā vācā karmaṇā, sumiro sataguru nāma || 1 ||
satya śabda ke paṭatare, deve ko kucha nāhin |
kāhale guru santoṣiye, haunśa rahi mana māhin || 2 ||
ati ūncā gahirā ghanā, buddhivanta bahu dhīra |
so dhokhā vicale nahin, sataguru mile kabīra || 3 ||

caupāī (2)

guru devana kī mahimā baranon, jaya gurudeva tumhāri saranon ||
gāvata hi guṇa pāra na pāvai, brahmā śankara śeṣa guṇa gāvai ||
prathamahin guru aisā jo kīnhā, tāraka mantra rāma ko dīnhā ||
mālā tilaka diyā svarūpā, jāko bande rājā bhūpā ||
gyānī guru upadeśa batāyā, dayā dharma kī rāha cinhāyā ||
jīva dayā ghaṭahī men hoī, jīva dayā brahma hai soī ||
guru ādhīna celā bolai, kharā śabda guru antara kholai ||
khārā misarī vacanahi khamai, guru saranon celā nita ramai ||
bhītara hiradaya guru son bhale, tāke pīche rāmahi mile ||
guru rījhe so kijai kāmā, tā pīche rījhegā rāmā ||
śiṣya sarasvati guru yamunā gangā, rāma mile saba saritā gaṅgā ||
celā guru guru me rāma, bhakti mahātama nyārā nāma ||
guru āgyā nirvāhe nemā, taba pāvai sarvagyaī premā ||
sarvagyaī rāma sakala ghaṭa sārā, hai sabahi men sabase nyārā ||
aisā jānai mana men rahai, khojai būjhai tāko kahai ||
guru mahimā sankṣepahi bhanī, guru kī mahimā ananta ghanī ||
avatāra dhari hari guru karai, guru kiye taba nārada tarai ||
śakha purātana aisī sunī, bāta hamārī guru son banī ||
kīḍī jaisā main hūn dāsā, paḍā rahūn guru caraṇon pāsā ||
guru caraṇon rākho viśvāsā, guruhi purāve mana ki āśā ||

|| sākhī ||

guru govinda aru śiṣya mile, kīnhā bhakti viveka |
tiraveṇī dhārā bahai, āge gaṅgā eka || 1 ||
guru ki mahimā ananta hai, mo se kahī na jāya |
tana mana dhana ko saunpike, caraṇon rahe samāya || 2 ||

caupāī (3)

guru sata pada japa amṛta vāṇī, guru bina mukti nahīn re prāṇī ||
guru hai ādi anta ke trātā, guru hai mukti pada ke dātā ||
guru gaṅgā kāśī sthānā, cāra veda gurugama se jānā ||
aḍasaṭha tīratha bhrami-bhrami āvai, so phala guru ke caraṇon pāvai ||
guru ko tajai bhajai jo ānā, tā paśuvā ko phokaṭa gyānā ||
guru pārasa parasai jo koī, lohā te jiva kañcana hoī ||
śuka guru kiye janaka vaidehī, vo bhī guru ke param sanehī ||
nārada guru prahalāda paḍhāye, bhakti hetu jina darśana pāye ||
kāga bhuśuṇḍi śambhu guru kīnhā, āgama nigama sabahī kahi dīnhā ||
brahmā guru agni ko kīnhā, homa yagya jina āgyā dīnhā ||
vaśiṣṭha muni guru kiye ragunāthā, pāye darśana bhaye sanāthā ||
kṛṣṇa gaye duravāsā śaraṇā, paye bhakti jaga tārana taranā ||
dhīmara śikṣā nārada pāye, caurāsī se turata bacāye ||
guru kahai soī hai sāncā, bina paricaya sevaka hai kāncā ||
guru samartha hai sabake pārā, guru śaraṇana utare bhavapārā ||
kahahin kabīra guru āpa akelā, daśon avatāra guru ke celā ||

|| sākhī ||

rāma kṛṣṇa se ko baḍā, unahūn to guru kīnha |
tīna loka ke ve dhanī, guru āge ādhīna || 1 ||
hari sevā yuga cāra hai, guru sevā pala eka |
tāke paṭatara nā tulai, santana kiyā viveka || 2 ||

(iti prathama sopāna)

सीलवंत सबसे बड़ा, सब रतनों की खान ।
तीन लोक की संपदा, रही सील में आन ।।

sīlavanta sabase baḍā, saba ratanon kī khāna |
tīna loka kī saṁpadā, rahī sīla men āna ||

आचार्य महंत संत सर्वेश्वर दास जी

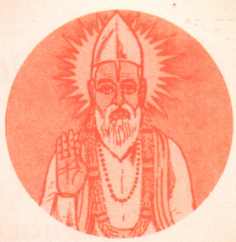

|| satyanāma ||

|| atha śrī gurumahimā ||

(dvitīya sopāna)

|| sākhī ||

bandaun caraṇa saroja guru, muda maṅgala āgāra |
jehi sevata nara hota hain, bhavasāgara ke pāra || 1 ||
guru ke sumiraṇa mātra se, nāśata vighna ananta |
tāse sarvārambha me, dhyāvata hain saba santa || 2 ||

caupaī (1)

guru guru kahi saba viśva pukāre, guru soī jo bharma nivāre ||
bahuta guru hain asa juga māhīn, haren dravya bava duḥkha kou nāhīn ||
tāse prathama parikṣā kījai, pāche śiṣya hoye dīkṣā lījai ||
binu jānai jo koī guru karahīn, so nara bhavasāgara men parahīn ||
pākhandī pāpī avicārī, nāstika kuṭila vṛtti bakadhārī ||
abhimānī nindaka śaṭha naṭakhaṭa, durācārayuta ablā lampaṭa ||
krodhī krūra kutarka vivādī, lobhī samtā rahita viṣādī ||
asa guru kabahun bhūli na kījai, inako dūrahi se taji dījai ||
nigamāgama rahasya ke gyātā, niḥspṛha hita anuśāsana dātā ||
dayā kṣamā santoṣa sañyuktā, parama vicāramāna bhavamuktā ||
lobha moha mada matsara ādī, rahita sadā paramāratha vādī ||
rāga dveṣa duḥkha dvandva nivārī, rahen akhanda satya vrata dhārī ||
bhadra veṣa mudrā ati sundara, gati apāra mati dharma dhurandhara ||
kṛpayā bhaktana para kara prīti, yathā śastra sikhave śubha nīti ||

|| sākhī ||

jinake svapanehu krodha ura, kabahun na hota praveśa |
madhura vacana kahi prītiyuta, deta sabahin upadeśa || 1 ||

caupāī (2)

hare abodha bodhaprada janake, nāśe aśeṣa kleśa jīvana ke ||
kṛtyākṛtya vikṛtya karma ko, nyāyānyāya adharma dharma ko ||
vividha bhanti niścaya karvāī, bhinna-bhinna saba bheda lakhāī ||
sata mithyā vastū parakhāvai, sugati kugati māraga darsāvai ||
tihi guru kī śaraṇāgati lījai, tana mana dhana saba arapaṇa kījai ||
asana basana vāhana arū bhūṣaṇa, suta dārā nija paricāraka gaṇa ||
kari saba bhenṭa guru ke āge, bhaktibhāva ura men anurāge ||
tana yātrā nirvāha ke kāraṇa, māṅge deya so kīje dhāraṇa ||
lai bhikṣuka sama dīna bhāva mana, kare praṇāma dandavata caraṇana ||
mahā yagya ko phala vaha pāvai, sukṛta bandi guru śīśa navāvai ||

|| sākhī ||

yehi vidhi guru ke śaraṇa hvai, kare nirantara seva |
guru sama jāne aura nahīn, tribhuvana men koyi deva || 1 ||

caupāī (3)

jina guru ko mānuṣa kari jāne, tina sama ko nirbhāgya ayāne ||
buddhi rahita nara paśu samānā, hai pratyakṣa bina puccha viṣānā ||
viśva vidita viśeṣa prabhutāī, govinda se guru kī hai bhāī ||
govinda kī māyā vaśa prāṇī, bhugate duḥkha caurāśī khānī ||
guru pratāpa bhavamūla vināśe, vimala buddhi hvai gyāna prakāśe ||
sukha akhaṇda nara bhoge jāī, satyaloka men vāsā pāī ||
guru se śreṣṭha aura jaga māhīn, hari virañci śaṅkara kou nāhīn ||
suhṛda bandhu suta pitu mahatārī, guru sama ko dūjā hitakārī ||

|| sākhī ||

jāke rakṣaka guru dhanī, sake kāha kari aura |
hari rūṭhe guru śaraṇa hai, guru ruṭhe nahin ṭhaura ||

caupāī (4)

yoga yagya japa tapa vyavahārā, nema dharma sañyama ācārā ||
veda purāṇa kahain goharāī, guru bina saba niṣphala hain bhāī ||
guru bina hṛdaya śuddha nahin hoī, koṭi upāya kare jo koī ||
guru bina gyāna vicāra na āve, guru bina koī na mukti hi pāve ||
guru bina bhūta preta tana dhārī, bhrame sahasra varṣa nara nārī ||
guru bina yama ke hātha bikāī, pāya dusaha duḥkha mana pachatāī ||
guru bina sanśaya kauna nivāre, hṛdaya viveka kauna vidhi dhāre ||
guru bina nahin agyāna vināśe, nahin nija ātama rūpa prākāśe ||
guru bina brahmagyāna jo gāve, so nahin muktti padāratha pāve ||
tehi kāraṇa niścaya guru kījai, sura durlabha tana khoya na dījiye ||

||sākhī ||

veda śāstra aru bhāgavata, gītā paḍhe jo koya |
tīna kāla santuṣṭa mana, bina guru kṛpā na hoya ||

caupāī (5)

akhila vibudha jaga men adhikārī, vyāsa vaśiṣṭha mahāna acārī ||
gautama kapila kaṇāda patañjali, jaimini bālamīka caraṇana bali ||
ye saba guru ke śaraṇe āye, tāse jaga men śreṣṭha kahāye ||
yāgyavalkya aru janaka videhī, dattātraya guru parama sanehī ||
caubīsa guru kīnhen jaga māhīn, ahaṅkāra ura rākhyo nāhīn ||
ambarīṣa prahlāda vibhīṣaṇa, etyādika jo bhaye bhakta jana ||

aurahu yatī tapī vanavāsī, ye saba guru ke parama upāsī ||
hari virañci śiva dīkṣā līnhā, nārada dhīmara ko guru kīnhā ||
santa mahanta sādhu hain jete, guru pada paṅkaja sevahin tete ||
śeṣa sahasra mukha bahu guṇa gāve, guru mahimā ko pāra na pāve ||

|| sākhī ||

rāma kṛṣṇa se ko baḍā, unahūn to guru kīnha ||
tīna loka ke ve dhanī, guru āge ādhīna ||

caupāī (6)

tapa vidyā ko kari abhimānā, pāye lakṣmī saṁpati nānā ||
jo nahin guru ko mastaka nāve, so nara ajagara ko tana pāve ||
nijamukha jo guru nindā karahīn, kalpa sahasra narka men parahīn ||
guru kī nindā sune jo koī, rāsabha śvāna janma tehi hoī ||
guru se ahaṅkāra ura dhārī, kare vivāda mūḍha avicārī ||
te nara maru nirjala bana jāī, tṛṣita maren rākṣasa tana pāī ||
jo guru ko taji aurahi dhyāve, hoya daridrī ati duḥkha pāve ||
bina darśana nahin guru ke rahiye, yaha dṛḍha niyama hṛdaya men gahiye ||
jo binu darśana karen ahārā, hoya vyādhi tana vividha prakārā ||
yathāśaktti jana cūke nāhīn, hoya aśakta doṣa nahin tāhīn||
guru sanmukha nahin baiṭhe jāī, khālī hātha hilāvata āī ||
jo kucha aura nahīn bani āve, patra puṣpa phala bhenṭa caḍhāve ||

|| sākhī ||

namrabhāva ati prītiyuta, caraṇa kamala śira nāya ||
jo sataguru āgyā karain, līje śīśa caḍhāya ||

caupāī (7)

ati adhīna hoya bole bānī, raṅka samāna jori yuga pānī ||
kabahun na baiṭhe pānva pasārī, jañghā par dhari āsana mārī ||
sanmukha hoya ke gamana na kīje, guru chāyā para pānva na dīje ||
gupta bāta kiñcita nahin rākhe, kari chala kapata na mithyā bhākhe ||
veda mantra sama kahanā māne, guru ko paramātama sama jāne ||
satyāsatya vicāra na kījai, guru kī kathana māni saba lījai ||
jo kachu śreṣṭha padāratha pāve, so guru caraṇana āni caḍhāve ||
guru kī adbhuta hai prabhutāī, mile sahasragunā hoya āī ||
kiye yathāvidhi guru kī pūjā, śeṣa rahe kartavya na dūjā ||
prabala pāpa nāṣe saba tana ke, hoya manoratha pūraṇa mana ke ||
jo guru ko bhojana karavāve, māno trilokahi nyonta jimāve ||

|| sākhī ||

guru kī mahimā amita hai, kaha na sake śrūti śeṣa |
jinake kṛpākaṭākṣa se, rańkahu hota nareśa ||

caupāī (8)

asa prabhāva hai dūsara kehimā, jo kachu hai satguru kī mahimā ||
sarva siddhiprada ati varadāyaka, duḥkha saṅkaṭa men parama sahāyaka ||
nita uṭhi pāṭha kare jo koī, sakala pāpa kṣaya tāke hoī ||
cita cintāsantāpa viṅāśe, sukha sampati aiśvarya prakāśe ||
mahāvyādhi jvara ādi nivārī, deya akāla mṛtyu bhaya ṭarī ||
lahen sakala sukha je jaga kere, kabahūn daridrī na āve niyare ||
hoya alabhya lābha māraga men, pāve māna pratiṣṭhā jaga men ||
parama mantra yaha akhila phalaprada,
haraṇa sakala bhava janma maraṇa gada||
śraddhāvāna bhakta lakhi līje, tāko yaha guru mahimā dīje ||
parama rahasya gūḍha yaha jānī, kahe na sabahin prasiddha bakhānī ||

|| sākhī ||

dhanya māta pitu dhanya hain,dhanya suhṛda anurakta ||
dhanya grāma vaha jāniye, jahān janme gurubhakta || 1 ||
bhakti prabhāva miṭī sakala, dharmadāsa kī pīra ||
koṭi janma ke puṇya se, sataguru mile kabīra || 2 ||

|| iti mahanta śrī śambhudāsa jī sāheba saṅkalita śrī gurumahimā sampūrṇa ||

|| āratī ||

jaya jaya śrīgurudeva ||
pārakha rūpa kṛpālaṁ, mudamaya trayakālam |
mānasa sādhu marālaṁ, nāśaka bhava jālam || 1||
kunda-indu vara sundara, santana hitakārī |
śāntākāra śarīraṁ, śvetāmbara dhārī || 2 ||
śveta mukuṭa cakrāṅkita, mastaka para sohe |
śubhra tilaka yuta bhṛkuti, lakhi muni mana mohe || 3 ||
hīrāmaṇi muktādika, bhūṣita ura deśam |
padmāsana sinhāsana, sthita maṅgala veśam ||4 ||
taruṇa aruṇa kañjāghri, jana-mana vaśakārī |
tama agyāna prahārī, nakha-dyuti ati bhārī || 5 ||

|| iti śubham ||

|| satyanāma ||

|| atha pūnon māhātmya prārambha ||

maṅgalācaraṇam – śloka

satyaṁ bodhamayaṁ nṛrūpamamalaṁ, pratyakṣasarveśvaram |
ratnairmaṇḍitaśirṣaśubhramukutaṁ, śvetāmbaraiḥ śobhitam ||
muktāmālavibhūṣitaṁ ca hṛdayaṁ, sinhāsane sansthitam |
bhaktānāṁ varada prasannavadanaṁ, śrīsadguruṁ naumyaham ||

dharmadāsa vacana |

dharmadāsa vinatī ik thānī, sataguru mohi kaho bilachānī ||
rahī aceta surati jaba morā, māsa vrata raheūn guru pūrā ||
aba guru pūra mile prabhu mohi, satya vrata aba kaho videhī ||
kauna vrata men surati lagāī, sataguru mohi kaho samujhāī ||

sataguru vacana |

dharmadāsa tuma būjhehu mohi, vrata kathā kahaun main tohi ||
niścaya vrata puruṣa ko āhīn, so dharmani parakho hiya mānhin ||
vrata prabhāva dharmani suno, tohi kahaun samujhāya ||
nija yaha vrata amara pada, jo nara niścaya dhyāya ||
pūnon ādi puruṣa nivāsā, surati nāma amiaṅka prakāśā ||
tuma jo praśna kiyo dharmadāsā, ādi pūnon kari parakāśā ||
puruṣa mohi niścaya vrata dīnhā, aṅkatritiya jori main linhā ||
pūnon vrata hi puruṣa ko hoī, surati hansa niḥakṣara (sa) moī ||
satya vrata main kahaun samujhāī, jāson pāpa sakala kṣaya jāī ||
nirguṇa brahma saguṇa avatārā, jāson jiva hoya nistārā ||
pūnon vrata kare jo koī, tāko āvāgavana na hoi ||
kāma-krodha-mada-lobha bhulāve, nindā iraṣā dūri bahāve ||
karma bharma para āśa visāre, sataguru caraṇa kamala cita dhāre ||
satya śabda men rahe samāī, bahuri na hansā yonina āī ||

dharmadāsa vacana |

dharmadāsa donon kara jorī, sataguru suniye vinati mori ||
pūnon vrata mohi kaho bujhāi, jāson kāla dagā miṭa jāī ||
jo kachu bheda ahai prabhu āgara, so kahiye hansana pati nāgara ||

sataguru vacana |

kahain kabīra dharmani suni leū, pūnon vrata niścaya tohi deūn ||
kotina yagya kare jo koi, koti tirtha kari āve soī ||
sakala pṛthvi phiri āve joī, so ik pūnon vrata phala hoī ||
sānce dila son barate soī, dharma-artha saba sukṛta hoī ||
yaha jo vrata kare mana lāī, duḥkha dāridra sakala miṭa jāī ||
rātri jāgraṇa kare banāī, nṛtya-gīta-bājintra bajāī||
bahuta stuti son jāgraṇa karaī, amaraloka men ja pagu dharaī ||
je nara karen prīti mana lāī, surati nirati hansā ghara jāī ||
pūnon dina ke piche jānī, bhojana eka jūna paramānī ||
pūnon prabhāta snāna karāī, sveta vastra le hṛdaya lagāī ||

nema ācāra se rahe punītā, aṣṭa prahara puni rahe āvadhūtā ||
kūra kapaṭa bhākhe nahin bhaī, satyanāma ko sumiraṇa lāī ||
eka bāra hiya kahai kabīrū, sumirata nāma miṭe jama pīrū ||
rūpa kabīra nirakhe dinarātī, hṛdaya vrata kare bahu bhāntī ||
sanyama je nara kare banāī, pāna prasāda le tahān dharāī ||
jauna māsa men pūnon āve, rakama-rakama ke sugandha mangāve ||
so sugandha le pāsa dharāī, le mṛtikā puni cauka divāī ||
ta para kanika ko cauka purāve, pallo sahita kalaśa dharāve ||
tā para dipaka bāre bhāī, gaū ghṛta bhare puni āī ||
pāna āma ke jhālara tānī, mevā aṣṭa kerā paravānī ||
saba sanyukta puni kare banāī, sādhu santa ko le baiṭhāī ||
nariyara pānca savāsau pānā, savā sera naivedya dharānā ||
saba vidhi sāja dhare puni āī, guru sādhū ko ādara lāī ||
pūnon pāṭha paṭhana puni lāgū, śrotā vaktā suni anurāgū ||
artha vicāre sabhā sunāve, saba santana ko dai samujhāve ||
jo koī adhikārī rahaī, tākara bheda yāhi vidhi lahaī ||
pūnon pāṭha sampūraṇa hoī, nariyara pānca more puni soī ||
jo nahin kou adhikārī pāī, pūjā nariyara * dhare uṭhāī ||
taba samaratha ko bhoga lagāī, pāna prasāda puni dei banṭāī ||
savā śera tandula dharavānā, gaū kṣīra puni āni paramānā ||
dina ke bhojana nāhin karāī, rātri bhojana kijai bhāī ||
khīra khānḍa ghṛta bhojana karaī, sāheba nāma hṛdaya men dharaī ||
saba pakavāna puni dhare banāī, taba sāheba ko bhoga lagāī ||
śankha jhānjha aru bāje tūrā, bhoga lagāve satya kabīrā ||
āpane hātha son dipaka bāre, so samaratha ki ārati utāre ||
candra lagana men dhyana dharījai, sūrya lagana men bhojana kījai ||
caudaśa lagana pūnon sukhadāī, paḍivā lagana pūnon duḥkhadāī ||
parivā lagana ke pīche jānī, gharī batīs cālis anumānī ||
ardha rātri laun pūnon hoī, tā dina vrata karo puni soī ||
dina ādhe se caudasa hoī, ūpara pūnon mile samoī ||
tā dina vrata karo ho bhāī, mana asthira hoy dhyāna lagāī ||
cāra prahara ko jāgraṇa kijai, ghara men baiṭha ke bhinna rahijai ||
cāra prahara nahin bani āve, ardha rātri laun hṛdaya jagāve ||
prahara mānhīn gharī ṭhaharāve, binā mantra jāgaraṇa na karāve ||
home agina kāṣṭha kī nānyī, sakala pāpa sahaje miṭi jāī ||
pūnon vrata kare jāgraṇa nahin karaī, tāko vrata niṣphalatā dharaī ||
jagraṇa kare mero guṇa gāve, amara hoya bahuri nahin āvai ||
pūnon prabhāta bhojana karāī, santa sādhu ko ādara lāī ||
santa pavāya āpa taba pāve, soī jīva sataloka sidhāve ||
ghṛta pakavāna kī kare rasoī, so santana ko bhojana hoī ||
santana ko caraṇāmṛta lijai, hṛdaya prema sadā puni kijai ||
tāko sataguru sadā sahāī, bānha pakaḍa jīva loka sidhāī ||

---

* The ***nariyara morane kā*** ceremony can only be performed by those who have been given this right by the *bansa guru*. So if on the day of ***pūnama*** there is a *mahanta* (authorised priest) in your midst, you can have the *nariyara morane kā* ceremony performed by him, otherwise all the *nariyara* (coconuts) offered in the ***pūnama pūjā*** should be kept and the *pūjā* should end with the offering (*bhoga*) of ***pānaprasāda***.

pūnon kathā jo sune sunāve, āpa tare aurana kun tāre ||
ucchiṣṭa bhojana kabahūn na karāve, para ghara bhojana karana na jāve ||
guru ki sevā satya hi bole, pūnon vrata kabahūn nahin ḍole ||
pūnon vrata sadā prati kijai, māsa māsa dehi sukha lijai ||
āpa karai aurana karavāve, tākā phala koi pāra na pāve ||
pūnon vrata īndrī dṛḍha rākhe, hṛdaya nāma puruṣa ko bhākhe ||
pūnon choḍa aur vrata karahin, so prāṇī bhavasāgara parahin ||
satyanāma gahe ekahi dhārā, so hansā hai puruṣa piyārā ||
yaha to vrata puruṣa ko hoī, duḥkha dāridra sakala puni khoī ||
pūnon vrata karo re bhāī, ṛdhi sidhi bahute so pāī ||
sukṛta hoya to bhakti hi pāve, garbhavāsa men bahuri na āve ||

dharmadāsa vacana ||

dharmadāsa vinati anusāri, sāheba sunīye arja hamārī ||
pūnon vrata nema mana dinhā, duḥkha sukha men kaise ke cinhā ||
deha aśuddha pūnon vrata āve, kaise aśuddha men vrata rahāvai ||
tāki mahimā kaho samujhāī, so main rākhaun hṛdayā mānhin ||
so sāheba kavane vidhi kīje, satya kaho kasa vrata rahīje ||
so baranana guru bhākho hamahīn, vrata prabhāva hṛdaya mahan dharahīn ||

sataguru vacana |

kahain kabīra suno dharmadāsā, sakala bheda main karaun prakāśā ||
dāsa ek vaṇika so veśā, jina linho hai guru upadeśā ||
nārī puruṣa eka mata kīnhā, bhāva bhakti paravānā linhā ||
stri puruṣa doū mama dāsū, mana sthira kara suno dharmadāsū ||
mana vaca karma gurupada pūjā, deva bhāva mana aura na dūjā ||
pūnon vrata kare cita dhārā, pativratā ghaṭa mānhin sudhārā ||
pūnon vrata karen dou prānī, tāsu kathā main kahaun bakhānī ||
tehi piche eka bheda batāūn, mana sthira kai suno prabhāū ||
tehi dāsa kī dāsī garbhāū, navon māsa puni pūraṇa āū ||
eka dina puruṣa banija ko jāī, ghara men sampati nāhi rahāī ||
bhayo putra puni maṅgala gāī, laga parosa kī nāri bulāī ||
pūnon vrata tāhi dina āvā, saba nārina mila vacana sunāvā ||

saba strī vacana |

suno sakhī tuma vacana hamarā, yaha to vrata chūti parihārā ||
sūtaka manhin vrata nā kī jai, kahā hamāro māna karījai ||
dūsara vrata āve puni joī, tā dina vrata karo tuma soī ||
aba tuma āpa rasoī karāvo, begi āja anna jala pāvo ||

putra kī mātā vacana ||

taba mukha bolī putra kī mātā, saba sakhiyana son bolī bātā ||
deha aśuddha hṛdaya śuddha nekā, kaise chāḍaun sataguru tekā ||
asūddha deha men prāṇa tajāī, kahu sakhi jīva kahān ko jāī ||
bhala tuma matā sunāyo āī, jīte mohi caurāśī nāī ||
jabahīn duḥkha hoya tana mānhīn, tabahu na cetahin yaha sansārī ||
jabahīn duḥkha hṛdaya men āve, niścaya nāma guru ko gāve ||

tabahīn guru puni hoya sahāī, niścaya duḥkha sakala miṭa jāī ||
janme putra bhaye duḥkha ānī, sataguru nāma japeun main jānī ||
āja vrata pūnon jo āī, dila se vrata rahaun main bhāī ||
pūnon vrata karaun nita nemā, kaise choḍaun sataguru premā ||
pūnon dina bhojana nahin kījai, sata sumiraṇa hṛdaya dhari līja||
cāra prahara bīte sakhī bhāī, pancavā pahara candra ko āī ||
tabai karaun anna au pānī, vrata mora sampūraṇa jānī ||
aise baiṭhe vrata nā tajahun, sāheba nāma hṛdaya men bhajahun ||
aise kahata sānjha hoya gayaū, nāri vrata sampuraṇa bhayaū ||
raina bhaī taba caḍhī rasoī, ghṛta pakavāna bane bahu soī ||
tāhi samaya santa doya āye, nāri dekha bahuta harṣāye ||
balaka chānḍi santa pahan āī, baḍe bhāva se ādara lāī ||
thārī le caraṇodaka līnhā, gṛha mānhī taba āsana dīnhā ||
āja vrata sampūraṇa bhayaū, jabai santa puni dāyā kiyaū ||
bhai pakavāna vyañjana saba soī, baḍī prīti son pārasa hoī ||
santa doya jaba baiṭhe āī, tāla mṛdaṅga aru śaṅkha bajāī ||
pātra lāya dhare puni āge, bhoga lagāvana samratha lāge ||
bhoga lagāya santa jaba pāye, mahāprasāda nārī taba khāye ||
kari bhojana jo baiṭhe doī, puruṣa dhyāna kī āśā hoī ||
puruṣa dayā santa jo āye, darśa puruṣa ko turatahi pāye ||
tāte vāsa loka men dīnhā, amṛta bhojana turatahi kīnhā ||
sonā rūpā bāsana pāī, anna dhana kī kachu kamī na rahāī ||
nārī subhāva bhakta puni soī, aise jīva koī viralā hoī ||
tāte sakala karma miṭi jāī, sataguru caraṇa men āni samāī ||

bhakti bhāva bhādon nadī, sabai calī utarāya |
saritā soī sarāhīye, jeṣṭha māsa ṭhaharāya ||
kṣamā kheta bhala jotiyā, sumirana bīja jamāya |
khanḍa brahmanḍa sūkhā pare, bhakti bīja nahin jāya ||

yaha vidhi vrata kare jo prāṇī, jīva ubārata vāra na ānī ||
aise jīva mile jo mohī, āvāgavana rahita ghara hoī ||
dharmadāsa jasa būjho mohī, vrata prabhāva kaheū main tohī ||

dharmadāsa vacana |

dharmadāsa būjhe kara jorī, samaratha suniye vinatī morī ||
tuma ho dayā vanta prabhu svāmī, ghaṭa ghaṭa ke tuma antarajāmī ||
eka bāta pūchana kī āśā, tākā svāmī karo prakāśā ||
aura vrata sabahīn nara karahīn, pūnon vrata cita eku na dharahīn ||
so kārana kauna hai svāmī, tuma aba kaho prabhū antarajāmī ||
aura vrata sabahīn nara karahīn, pūnon vrata cita eka na dharahīn ||
so prabhāva kaho guru pūre, sadā rahaun main caraṇa hajūre ||

sataguru vacana |

kahain kabīra suno dharmadāsā, sakala bheda main karaun prakāśā ||
aura vrata sugama hai bhāī, sata vrata ko nāhin tulaī ||
pūnon vrata sadā sukhadāī, rādhe vrata param pada pāī ||
aura vrata saba karen karaven, pūnon vrata kā bheda na pāven ||

ekādaśi vrata cita son karaī, caubisa phala sāla men paraī ||
caubīson ka mata hai nyārā, rādhe vrata janame sansārā ||
jo jāson jaisā phala cāhī, soī vrata kare mana mānhīn ||
suna dharmani yaha agama sandeśā, pūnon vrata satguru pada bheśā ||
aura suno sansāra subhāū, donon dīna ko bhāva batāūn ||
musalamāna jo rojā karen, so taisā phala vāko dharen ||
yaha jo karmakāṇḍa vyavahārā, pūnon bheda hai unate nyārā ||
satya vrata puruṣa anusārā, dharmani tumason kahyo vicārā ||
pūnon vrata mūla le rākhā, aura vrata sakala hai śakhā ||
jā dina utapati puruṣa anusārā, tā dina pūnon ko vistārā ||
soraha ansa pragaṭa jaba kīnhā, vrata upāsana pūnon dīnhā ||

pūnon mahātmya pratīta kari, jo nija jāne koya |
bhatki kare bharme nahīn, tāhi mukti phala hoya ||
mukti bheda tumason kahyo, dṛḍha kari rākhu śarīra |
nirbhaya hoya niḥśaṅka bhaju, keval nāma kabīra ||

pūnon vrata karen cita lāī, tākara sakala karma miṭa jāī ||
bahuri na hansā bhavajala āī, sukhasāgara men jāya samāī ||
aiṭha junṭha son rahe ninārā, kahain kabīra so hansa hamārā ||
sāncā vacana bole mṛdu bānī, so jīva niścaya lokasamānī ||
mero pantha khānḍe kī dhārā, jo gahai so utare pārā ||
sumaraṇa caukā jota nivāsā, tabahī dīpaka āni prakāśā ||
satyaloka men kīnhon bāsā, jagamaga jota roma ujiyāsā ||
ajara vastu ka jāne bhedā, kahain kabīra so hansa achedā ||
uttama sadana puhupa ki mālā, bandanavāra racī dharmaśālā ||
vratī hoya strī nāparase, tāko kāla kabahu nā darase ||
pūnon ke dina nema acārā, bahuta bhānti son rahe ninārā ||
pūnon vrata kare lau lāī, tāko sataguru sadā sahāī ||
pūraṇamāsī sadā nivāsī, amara loka son āī dāsī ||
yehī vrata ko sādho bhāī, yehī vrata mohi puruṣa lakhāī ||
yehī vrata se sakalon sukha hoī, yehī vrata se loka samoī ||
yehī upāsana santana sevā, yehi upāsana apanavasa devā ||
pūnon vrata puruṣa ko hoī, amarapurī son āyo soī ||
puruṣa jo mana men kīnha vicārā, pūnon vrata mukti vistārā ||
pūnon mahimā sune sunāvai, caurāsī men bahuri na āvai ||
pūnon pāṭha nita nema jo karaī, so prāṇī bhavasāgara taraī ||
nita nema jo sune cita lāī, tāko kāla dagā miṭa jāī ||
puruṣa so unakī rakṣā kare, jama se phanda kabahū nahin pare ||
sabahi devatā karen baḍāī, dhanya ve hansa param pada pāī ||
dhanya pratāpa pūnon kā sāncā, jāke bala jiva jama son bāncā ||
brahmā viṣnu maheśvara gāve, dhanya ve hansā loka sidhāve ||
pūnon mahātmya kahan laga kahiye, śravaṇa sunata param pada lahiye ||
kahain kabīra suno dharmadāsā, param pada kī rākho āsā ||
jo tuma pūcheu agama sandeśā, so main tohi kaheun upadeśā ||
dharmadāsa yaha vastu apārā, pūnon vrata hai gupta vicārā ||
mana vaca karma hṛdaya jo dharaī, sakala manorata sataguru puraī ||

jo koī nārī hoya banjhārā, pūnon vrata kare anusārā ||
tāke udara bālaka jo āī, dhani mahima hai sataguru sānyī ||
gata sanśaya ajagaibī hoī, so yaha vrata karai puni soī ||
rādhata vrata sakala miṭa jāī, hṛdaya śuddha sen vrata karāī ||

dharmadāsa vacana |

dharmadāsa caraṇana uṭhi pariyā, śīśa nanvāya carana tara dhariyā ||
dhani sadguru dhani vrata tumhārā, tumharī dayā son jīva ubārā ||
he svāmī eka pūchaun tohī, vrata prabhāva kaho guru mohī ||
pūnon vrata jabai cali āvai, dui yuga bandha son vrata rahāvai ||
kai prabhu eka vrata puni kījai, eka vrata donon phala lījai ||
so nirṇaya mohi kaho bujhāī, nārī puruṣa ko matā sunāī ||

sataguru vacana |

dharmadāsa yaha būjho bhāū, nārī puruṣa itihāsa sunāū ||
jaga kāraṇa nārī puni hoī, so vāmāṅgī bolai soī ||
so ardhāṅgī puruṣa kī hoī, donon matā eka puni hoī ||
tākara bheda aba kahaun bujhāī, dharmadāsa suniyo cita lāī ||
nārī puruṣa eka aṅga jānā, śruti purāṇa so kare bakhānā ||
puruṣa aṅga jo ādhā hoī, nārī aṅga men bedhā soī ||
nārī aṅga ādhā jo kahiye, soī aṅga puruṣa men lahiye ||
puruṣa vrata jo rādhe bhāī, soī phala nārī jo pāī ||
nārī vrata kare anusārā, soī puṇya puruṣa men dhārā ||
donon vrata rahen jo prāṇī, satya vacana mukha bole bānī ||
so ardhāṅgī nāma sohārā, puruṣa vacana hṛdaya men dhārā ||
so pativratā bolai soī, piyā vacana ṭāre nahin koī ||
dharmadāsa yaha bheda batāvā, nārī puruṣa ko bhāva sunāvā ||
niśadina rahai nāma lauvalīnā, bhūkhā pyāsā ātama cīnhā ||
jā dvāre para āvai koī, bahuta dīna se miliye soī ||
sataguru bhakti yahī paramānā, dayā dīna ghata māhin samānā ||
jaise pīra apana aṅga jānā, taise sakala jīva men mānā ||
dharmadāsa yaha gehī bhāū, santa sādhu kā ādara lāū ||
dharmadāsa yaha būjho bānī, satyaloka kī kahī niśānī ||
mana vaca karma vrata jo dharaī, tākā mahimā kahan laga kahaī ||
so prāṇī baḍa bhāgī hoī, sāton puruṣā tāre soī ||
jā gṛha bhakta leya avatārā, agale pichale sabai ubārā ||
dhanya bhāga jīvana kā hoī, jā ghara bhakta pragaṭa puni hoī ||

prathama mandira jharāya ke, caukā dāra putāya |
pāna prasāda banāya ke, sāheba ko bhoga lagāya ||
vrata raho cita lāya ke, santa ko leya prasāda |
kahain kabīra dharmadāsa son, tare sahita aulāda ||

||iti śrī pūnon māhātmya sampūrṇa ||

|| kaharā ||

pūraṇamāsī sadā nivāsī, satyaloka te āī hai |
pūnon kera vrata karo ghaṭa men,
dilase sānca dharo bandīchora batāī hai || 1 ||
aura vrata hai ātā jātā, pūnon vrata mukti kā dātā |

jānegā koī sugyātā, saṅkaṭa mānhin sahāī hai || 2 ||
caukā cāru aru pāna miṭhāī, agara abīra sugandha uḍāī hai |
satyanāma kī phirī duhāī, saba santan ke mana bhāī hai || 3 ||
jīva ke sāṭe nariyara dīnhā, jīva chuḍāya kāla son līnhā |
bandīchoḍa pāra kara dīnhā, satya kabīra sahāī hai || 4 ||

|| maṅgala ||

pūraṇamāsī āja to maṅgala gāiye|
sadguru caraṇa manāya parama pada pāiye ||

prathamen mandira jhāra to candana putāiye |
nūtana vastra āna candevā tanāiye ||
gaja motiyana kā cauka tahān purāiye |
mevā aru miṣṭhānna bahuta vidhi lāiye ||

pāna supārī nariyara tahān caḍhāiye |
gaū ghṛta pakavāna so dhotī uḍhāiye ||
pallava sahita jo kalaśa tahān dharāiye |
pānca bātī ke dīpaka tahān barāiye ||

guru ke hetu so āsana tahān bichāiye |
guru ke caraṇa pakhāri tahān baiṭhāiye ||
sādhu santa saṅga lāya to ārati utāriye |
āratī kara puni nariyara tahān morāiye ||

puruṣa ko bhoga lagāya sakhā mila pāiye |
pāya prasāda aghāya caraṇa cita lāiye ||
jugana jugana kī kṣudhā, so turata bujhāiye ||
ati adhīna ho prema son, guru ko rijhāiye ||

kahain kabīra sata bāva, so loka sidhāiye ||

|| āratī ||

jaya jaya śrī pūrṇimā ||
jana mana duḥkha vināśini, santana hitakārī |
sadguru bhakti prakāśini, tāraka sansārī || 1 ||
yaha niścaya vrata pūnama, antara śuddhi karai |
kāmādika ripu nāśai, kaśmala akhila harai || 2 ||

sadguru santana sevā, tana mana son kīje |
caraṇa bandagī pūjā, pātaka kula chīje || 3 ||
caraṇa dhoya caraṇāmṛta, mastaka para dhariye |
śreṣṭha tīrtha gahi mukha men, mana mala parihariye || 4 ||

candana akṣata sundara, phūlana kī mālā |
dhūpa dīpa naivedyon, ke uttama thālā || 5 ||
kañcana thālī men kari, śuddha kapura jotī |
hansa santa saṅga sadguru, kī ārati hotī || 6 ||

yahi vidhi pūnama kīnhī, dharmadāsa guru ne |
satya kabīra lakhāī, tāraka sadguru ne ||7 ||
karihain jo yā bhava men, pūnama vrata pūjā |
bhukti mukti phala pāven, bhāva nahīn dūjā || 8 ||

āratī pūraṇamāsī, sukṛta sajavāī |
sadguru sanmukha darśana, kari maṅgala gāī || 9 ||

|| śubhamastu ||

VILLE DE PARIS
Transport facilities

Satyanam

With Best Complements from

VILLE DE PARIS
Transport facilities for
Blocks, Macadams,
Rocksand & others

Please Contact

Messrs Sunil or
Kishore Soobhug,
Soomaroo Lane,
Pointe aux Piments

Phone **261 5317 / 8851**

आपा तजे औ हरि भजे, नख सिख तजै विकार ।
सब जीवन से निवैरा रहे, साधुमता है सार ।।

āpā taje au hari bhaje, nakha sikha tajai vikāra |
saba jīvana se nirvaira rahe, sādhumatā hai sāra ||

Meaning

Give up the pride of clan and caste and do devotion to God. Give up your faults (lust, anger, greed, etc.);

Don't be an enemy to anyone. This is the basic principle of the saints.

Commentary:

Saints want the welfare of every one and advise tolerant behaviour towards all. People who are full of ego, easily develop enmity towards others. Saints are free of ego and enmity.